

सारांश

बहुत समय पहले की बात है । अरब देश में अलाउद्दीन नाम का एक गरीब बालक अपनी माँ के साथ एक छोटे से घर में रहता था । वे लोग बेहद गरीब थे । अलाद्दीन आलसी था और दिन भर गली-सड़क पर दोस्तों के साथ खेलता रहता था । एक दिन एक दुष्ट जादूगर उसके पास आकर बोला कि वह अफ्रीका से आया है और उसका चाचा है । अलाउद्दीन उसे अपने घर ले आया । अगले दिन जादूगर ने अलाउद्दीन को कुछ सुन्दर कपड़े खरीद दिया फिर वह उसे एक पहाड़ी के नीचे ले आया । वहाँ पर उसने लकड़ियों की सहायता से आग जलाया और जादू किया जिससे जमीन में एक बड़ा छेद हो गया । जादूगर ने अलाउद्दीन को अपनी अँगूठी दी । उसने कहा कि यह अँगूठी उसकी रक्षा करेगा । फिर उसने अलाउद्दीन से कहा कि वह सीढ़ियों से नीचे उतर उसे वहाँ पड़ा एक लैम्प ला दे । नीचे अलाउद्दीन ने देखा कि एक पेड़ पर ढेर सारे जवाहरात हैं । वह अपनी कमीज के अन्दर लैम्प रख चुका था । फिर वह जवाहिरात भी तोड़कर कमीज के अन्दर रखने लगा । जब वह ऊपर चढ़ा तो जादूगर ने उससे वह लैम्प माँगा । जवाहरात के नीचे दबे होने से अलाद्दीन वह लैम्प नहीं निकाल पाया तो जादूगर ने उस छेद को एक बड़े पत्थर से ढक दिया । अँधेरे में भयभीत अलाउद्दीन ने अपने हाथ रगड़े तो अँगूठी में से एक जिन्न निकला । उसने कहा कि वह उस अँगूठी का गुलाम है और वह उसकी कैसी भी हो मदद करेगा । जिन्न की सहायता से अलाउद्दीन जमीन के बाहर आ गया । फिर वह खुश होकर सुरक्षित अपने घर को भाग गया ।